E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 13-11-2023
Accepted: 17-12-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 1; 2024; Page No. 401-405

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण योग्यता और जिम्मेदारी की भावना के बीच संबंधों का अध्ययन

[1]Reeta Srivastava and [2]Dr. Ram Dhan Bharti

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

Corresponding Author: Reeta Srivastava

सारांश

शिक्षण शिक्षकों और छात्रों के बीच एक सहयोगी साझेदारी है। शिक्षक की क्षमता एक व्यापक शब्द है जिसमें शिक्षक का व्यक्तित्व, पूर्वाभास, प्रक्रिया और उत्पाद चर शामिल हैं, जबकि शिक्षण क्षमता कक्षा शिक्षण के दौरान प्रस्तुत शिक्षण व्यवहार और विभिन्न शिक्षण कौशलों के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक है। एक शिक्षक का प्रभावी शिक्षण उसे एक सक्षम शिक्षक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षण क्षमताओं का आकलन करने के लिए विभिन्न तरीके हैं, ये हैं निर्णय, कक्षा का अवलोकन, शिक्षक व्यवहार का सैद्धांतिक ढांचा और प्रयोगात्मक अध्ययन। दूसरे शब्दों में, शिक्षक की क्षमता "ज्ञान की इकाइयों, उपयोग और शिक्षार्थियों के कौशल को स्थानांतरित करने का प्रभावी तरीका" को संदर्भित करती है। वर्तमान अध्ययन नीति निर्माताओं, प्रशासकों और मास्टर प्रशिक्षकों के लिए अधिक उपयुक्त और प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण ढांचे (प्री–सर्विस और इन–सर्विस), शिक्षकों के लिए प्रेरण कार्यक्रम, चिंतनशील शिक्षण और अभिनव शिक्षण आदि की योजना बनाने में सहायक होगा। यह शैक्षिक शोधकर्ताओं, शिक्षकों और शिक्षाविदों को छात्रों के सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता कर सकता है जो काफी हद तक शिक्षक के पेशेवर विकास की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। यह भविष्य के शिक्षकों के साथ–साथ कार्यरत शिक्षकों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में भी सहायक हो सकता है। वर्तमान अध्ययन भविष्य में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षक के प्रदर्शन के अंतर को कम करने के लिए उपचारात्मक उपायों को अपनाने में भी मदद करेगा। अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से शिक्षण और शिक्षक शिक्षा में योगदान देगा।

मूल शब्द: शिक्षण, शिक्षकों, छात्रों, कार्यक्रम, चिंतनशील, ग्रामीण

1. प्रस्तावना

अच्छी शिक्षा शायद ठोस शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षण एक बहुमुखी और मूल्यवान अभ्यास है जो छात्रों के सीखने में उपलब्धि लाने के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षण के महत्व के कारण, इसे प्रभावी और अच्छी गुणवत्ता वाला होना आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में शिक्षण के महान महत्व को शिक्षकों, शिक्षाविदों, शिक्षा मंत्रियों, शिक्षक संघों और आम जनता द्वारा स्वीकार किया जाता है। स्कूलों में शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण और प्रसार के तरीके सीखने के परिणामों और असमानता को कम करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षक शिक्षा सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता के साथ–साथ शिक्षण पेशे की गुणवत्ता के लिए भी महत्वपूर्ण है। एनजीओ प्रथम द्वारा आयोजित वार्षिक शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट (2017) से पता चलता है कि पिछले पाँच वर्षों में सरकारी स्कूलों में सीखने की गुणवत्ता खराब हुई है, और निजी स्कूलों में पढ़ने और अंकगणित कौशल के मामले में सुधार हुआ है। इसलिए, स्कूल परिवर्तन के सभी पहलू इसकी सफलता के लिए उच्च कुशल शिक्षकों पर निर्भर करते हैं। शिक्षकों को अधिक जटिल पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए और भी अधिक परिष्कृत क्षमताओं की आवश्यकता होती है। शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सबसे प्रत्यक्ष और आशाजनक रणनीतियों में से एक है। 21वीं सदी की तेजी से बदलती दुनिया में, उच्च शिक्षा भी बदल रही है; शिक्षक की भूमिका भी बदलेगी। शिक्षा और शिक्षकों के लिए नई सामाजिक चुनौतियाँ और माँगें, स्कूलों को सामाजिक अनुबंधों के साथ आधुनिक संस्थानों में बदलना। 'आदर्श' शिक्षकों के गुण राष्ट्र के भविष्य के लिए उनके पेशेवर उद्देश्यों और आवश्यकताओं को पूरा करना है। शिक्षण क्षमता, पेशेवर कौशल, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना शिक्षक के पेशे का मूल है। शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव जाति। यह आंतरिक विकास और विकास की कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है और व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है। शिक्षा बेहतर और उच्च जीवन के लिए ज्ञान और सशक्तिकरण की प्रक्रिया है। शिक्षा की एक अच्छी और प्रभावी प्रणाली शिक्षार्थियों की क्षमताओं को साकार करती है, उनकी क्षमताओं को मजबूत करती है और उनकी प्रतिभा, रुचियों और मूल्यों को

समृद्ध करती है। इसे सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दा और राष्ट्र निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण एजेंसी माना जाता है। शिक्षण एक प्रतिस्पर्धी गतिविधि है। पेशे के लिए काम करने वाले शिक्षकों की बड़ी मांग के बावजूद इसने दुनिया भर में पर्याप्त योग्यता, प्रशिक्षण और महत्वाकांक्षा के साथ ज्यादा ध्यान आकर्षित नहीं किया है। शिक्षकों को दूसरे कौशल, रणनीतियों, तरीकों और आवश्यकताओं से अधिक परिचित होने और नई ज़िम्मेदारियाँ बनाने के लिए डिज़ाइन की गई मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है।

किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया की सफलता शिक्षण क्षमता, शिक्षण योग्यता और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और कई अन्य कारकों पर निर्भर करती है। शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक शिक्षक की जिम्मेदारी की भावना है। हैल्वोर्सन, ली, और एंड्रेड (2009) ने कहा कि शिक्षकों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना संभावित रूप से उनके शिक्षण प्रथाओं, मनोवैज्ञानिक कल्याण और अंततः उनके छात्रों के सीखने और प्रदर्शन को प्रभावित करती है। शिक्षक की जिम्मेदारी की विभिन्न धारणाएं परिणामों से जुड़ी हुई हैं जैसे शिक्षण के लिए अच्छी स्थिति और समर्पित कार्य। जैसा कि लॉरमैन और काराबेनिक (2013) ने कहा है, जिम्मेदारी की भावना से तात्पर्य है "शिक्षक स्वयं अपनी जिम्मेदारियों को कैसे देखते हैं और किन परिस्थितियों में वे ऐसे परिणामों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए तैयार हैं"। रोज़ और मेडवे (1981) के अनुसार, यूनेस्को (2008) के अनुसार, 21वीं सदी में एक शिक्षक की योग्यता इस बात से संकेतित होती है कि एक सक्षम शिक्षक को अपने विषय के पाठ्यक्रम का पक्का ज्ञान होना चाहिए और पाठ्यक्रम में तकनीक का उपयोग करना आना चाहिए। इसी तरह, शिक्षण के प्रति शिक्षकों का रवैया शिक्षा और संबंधित शैक्षिक कार्यक्रम में उनकी भागीदारी की प्रकृति और सीमा को प्रभावित करता है। शिक्षकों के वांछित व्यवहार को बढ़ाकर या वांछित के प्रति उनके रवैये को बदलकर छात्रों की प्रभावी और कुशल शिक्षा को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षण कौशल का विकास शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करता है। इसलिए, शिक्षकों को अपेक्षित कार्यों की पूर्ति सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, जिम्मेदारी की भावना, रुचि, मूल्य और शिक्षण पेशे की कुछ योग्यताएं हासिल करनी होती हैं। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना के संबंध में शिक्षण क्षमता का पता लगाना है।

2. अध्ययन का महत्व

शिक्षक की भूमिका की पुरानी अवधारणा को एक नई अवधारणा में बदल दिया गया है, और शिक्षक को केवल ज्ञान और संस्कृति का संचारक नहीं, बल्कि परिवर्तन का एजेंट माना जाता है। उन्हें पूरे ब्रह्मांड का परिवर्तक माना जाता है। यह संभव है अगर उनमें वह भावना हो। वैश्विक स्तर पर, शिक्षक की गुणवत्ता के लिए सामुदायिक अपेक्षाएँ ऐसे समय में बढ़ रही हैं जब शिक्षक की स्थिति में गिरावट आ रही है। व्यवसाय में व्यस्त किसी भी व्यक्ति के लिए निराशा पेशेवर ठहराव का कारण बन सकती है। शिक्षण क्षमता, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना के बिना एक शिक्षक, न केवल अपने लिए बल्कि पूरे समाज के लिए एक बड़ी क्षति है। राष्ट्र की शैक्षिक व्यवस्था का पूरा ढांचा माध्यमिक शिक्षा पर आधारित है और इसके लिए वर्तमान शैक्षिक प्रणाली और इसके विकास, सामग्री ज्ञान, शिक्षण और पाठ्यक्रम में योगदान को समझने की आवश्यकता है। अध्ययन का महत्व स्पष्ट रूप से डिज़ाइन किए गए विषय ज्ञान के आधार और व्यावहारिक और व्यक्तिगत ज्ञान सीखने के लिए शिक्षकों के निरंतर विकास से उत्पन्न होता है। रोजगार के बाद की चुनौतियाँ और समस्याएँ शोषणकारी रोजगार की स्थिति से लेकर एक तरफ तदर्थवाद और कम वेतन तक, दूसरी तरफ पुराने शिक्षक ज्ञान और पेशेवर कौशल, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और प्रतिबद्धता की कमी। इस स्थिति में, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षण क्षमता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना की भूमिका का अध्ययन करना आवश्यक है।

3. साहित्य की समीक्षा

सिंह (2008) ने लिंग और शिक्षण अनुभव के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का एक अध्ययन किया। नमूने में लखनऊ के 12 निजी और सहायता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत 96 माध्यमिक विद्यालय शिक्षक शामिल हैं। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच उनकी शिक्षण योग्यता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। पांच साल से कम और छह से दस साल इस नमूने में 18 माध्यमिक विद्यालयों से सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधियों द्वारा चुने गए 750 शिक्षक शामिल थे और पाया गया कि शिक्षकों की शिक्षक क्षमता का उच्च स्तर पाया गया। शिक्षकों की शिक्षक क्षमता का उनकी शैक्षिक योग्यता, अनुभव और स्कूल के आकार के साथ सकारात्मक सहसंबंध था।

श्रीवास्तव (2009) ने शिक्षण योग्यता और शिक्षण योग्यता और पेशेवर प्रतिबद्धता के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए एक अध्ययन किया। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले में सर्वेक्षण विधि के माध्यम से 300 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के नमूने पर किया गया था। इस अध्ययन से पता चला कि शिक्षण योग्यता और शिक्षण योग्यता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि सरकारी स्कूल के शिक्षक निजी स्कूल के शिक्षकों की तुलना में अधिक सक्षम थे। यह भी पाया गया कि शिक्षकों की आयु प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता को प्रभावित नहीं करती है।

हमदान और ली (2010) ने जोहोर बाहरू, मलेशिया के विभिन्न माध्यमिक/प्राथमिक विद्यालयों के 309 शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन किया परिणाम से पता चला कि सभी शिक्षक सक्षम थे और शिक्षण क्षमता और लिंग के बीच तथा विशेषज्ञता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध थे।

सबू (2010) ने सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों, आयु, लिंग और स्कूल के प्रकार के संबंध में शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर एक अध्ययन किया। जांच के लिए चुने गए नमूने में केरल के कोल्लम जिले के 24 माध्यमिक विद्यालयों के 631 शिक्षक शामिल थे। परिणामों से पता चला कि सेवाकालीन कार्यक्रमों में भाग लेने की संख्या, आयु, लिंग और स्कूल के प्रकार के संबंध में शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

लियाकोपोलू (2011) ने अपने अध्ययन में शिक्षकों की पेशेवर क्षमताः कौन से गुण, दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान एक शिक्षक की प्रभावशीलता में योगदान करते हैं? नमूने में ग्रीस के 727 सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। यह पाया गया कि शिक्षकों की प्रभावशीलता उनके द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण और उनके व्यक्तित्व लक्षणों पर निर्भर करती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षकों के विशेष कौशल, शैक्षणिक और सामग्री ज्ञान शिक्षण क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण योग्यता और जिम्मेदारी की भावना के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

5. अनुसंधान क्रियाविधि

शोध शब्दावली में, जनसंख्या को व्यक्तियों, संगठनों और वस्तुओं के एक व्यापक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, साथ ही शोधकर्ता के लिए रुचि की सामान्य विशेषताएँ भी। समूहों की सामान्य विशेषताएँ उन्हें अन्य व्यक्तियों, संगठनों, वस्तुओं और अन्य से अलग करती हैं। परिमित जनसंख्या में सभी सदस्यों को आसानी से गिना जा सकता है। अनंत जनसंख्या का अर्थ है कि इसका आकार असीमित है और इसके सदस्यों की गणना नहीं की जा सकती। इस अध्ययन की लक्षित जनसंख्या में कानपुर के जिलें के सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। डेटा संग्रह अनिवार्य रूप से शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और अपेक्षित डेटा एकत्र करने के लिए शोधकर्ता को संबंधित जनसंख्या का नमूना लेना होता है, लेकिन कुल जनसंख्या का अध्ययन संभव और अव्यवहारिक नहीं है। इसलिए, शोध निष्कर्षों को किफायती और सटीक बनाने के लिए नमूनाकरण की अवधारणा पेश की गई थी। जनसंख्या और नमूने में एक 'देना और लेना' संबंध होता है, जिसके तहत जनसंख्या से नमूना बनाया जाता है और बदले में जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत नमूने से निष्कर्ष निकाले जाते हैं। "एक नमूना डिजाइन निर्दिष्ट लोगों से नमूना प्राप्त करने या विचार करने के लिए एक स्पष्ट योजना हो सकती है। यह उस रणनीति या प्रक्रिया का वर्णन करता है जिसे अन्वेषक नमूने के लिए वस्तुओं का चयन करने में अपनाएगा। नमूना डिजाइन भी निर्धारित कर सकता है और नमूने में जोड़ी जाने वाली वस्तुओं की संख्या जो नमूने का आकार है। नमूना आकार इस बात पर बहुत प्रभाव डालता है कि नमूना निष्कर्ष किसी विशेष आबादी को कैसे सटीक रूप से उजागर करते हैं । नमूना जितना बड़ा होगा, उतनी ही अधिक संभावना है कि सामान्यीकरण किसी विशेष आबादी का संभावित प्रतिबिंब हो । वर्तमान अध्ययन कानपुर जिलें के सरकारी हाई स्कूलों और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 350 नियमित सेवारत शिक्षकों के नमूने पर किया गया था। अधिक व्यापक जांच के लिए बहुस्तरीय नमूनाकरण का उपयोग किया गया था।

6. परिणामों का विश्लेषण

अंकों के वितरण की सामान्यता का परीक्षण करने के लिए, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चरों से संबंधित माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस के मानों की गणना की गई, जैसा कि तालिका 1. में दिखाया गया है

तालिका 1: शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों के माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस को दर्शाती है (एन = 350)

समूह	माध्य	माध्यिका	विधा	एस.डी.	तिरछापन	कर्टोसिस
माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	83.48	85.00	88.04	17.13	-0.310	-0.682

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर को सामान्यता के लिए परखा गया। तालिका 2 से पता चलता है कि शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों के माध्य, माध्यिका और बहुलक के मान क्रमशः 83.48, 85.00 और 88.04 हैं जो एक दूसरे के काफी निकट हैं। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मामले में तिरछापन और कुर्टोसिस के मान क्रमशः −0.310 और − 0.682 हैं जो वितरण को नकारात्मक रूप से तिरछा और प्लैटिकर्टिक के रूप में दर्शाते हैं। लेकिन ये विकृतियाँ काफी छोटी हैं। इसलिए, वितरण को सामान्य माना जा सकता है।

कुल नमूने के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण पर औसत अंकों का आवृत्ति बहुभुज माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कुल नमूने पर शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर पर अंकों (माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, तिरछापन और कुर्टोसिस के माप) का विवरण तालिका 2. में प्रस्तुत किया गया है

तालिका 2: शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों का आवृत्ति वितरण (एन = 350)

स्कोर	आवृत्ति
20.40	1
40.60	35
60.80	104
80.100	110
100.120	80
120.140	20
कुल	350

तालिका 2. में शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के चर पर वितरण की आवृत्तियों के अंकों के साथ कुल जनसंख्या की भविष्यवाणी की गई है, अधिकांश आवृत्ति वितरण सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए 80–100 के वर्ग अंतराल के बीच स्थित है।

कुल नमूने के उत्तरदायित्व की भावना के अंकों पर वर्णनात्मक सांख्यिकी: कुल नमूने के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की उत्तरदायित्व की भावना पर तुलना के लिए, दो समूहों अर्थात लिंग और स्थानीय के साथ महत्वपूर्ण संबंध का पता लगाने के लिए टी–अनुपात की गणना की गई है और शिक्षण अनुभव के लिए एनोवा का उपयोग किया गया है।

वर्णनात्मक सांख्यिकी का विश्लेषण

अंकों के वितरण की सामान्यता का परीक्षण करने के लिए, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की जिम्मेदारी की भावना के चरों से संबंधित माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस के मानों की गणना की गई, जैसा कि तालिका 3. में दिखाया गया है

तालिका 3: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के उत्तरदायित्व की भावना के चर पर अंकों के माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस को दर्शाती है (एन = 350)

समूह	माध्य	माध्यिका	विधा	एस.डी.	तिरछापन	कर्टोसिस
माध्यमिक विद्यालय शिक्षक	68.74	71.00	75.53	13.50	-0.200	-0.015

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच जिम्मेदारी की भावना के चर को सामान्यता के लिए परखा गया। तालिका 3. से पता चलता है कि जिम्मेदारी की भावना के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के स्कोर के माध्य, माध्यिका और बहुलक के मान क्रमशः 68.74, 71.00 और 75.53 हैं जो एक दूसरे के काफी

निकट हैं। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के मामले में तिरछापन और कुर्टोसिस के मान क्रमशः −0.200 और −0.015 हैं जो वितरण को नकारात्मक रूप से तिरछा और प्लैटिकर्टिक के रूप में दर्शाते हैं। लेकिन ये विकृतियाँ काफी छोटी हैं। इसलिए, वितरण को सामान्य माना जा सकता है।

कुल नमूने की जिम्मेदारी की भावना पर औसत अंकों की आवृत्ति बहुभुज

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कुल नमूने पर जिम्मेदारी की भावना के चर पर अंकों (माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, तिरछापन और कुर्टोसिस के माप) का विवरण तालिका 4. में प्रस्तुत किया गया है

तालिका 4: जिम्मेदारी की भावना के चर पर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के अंकों का आवृत्ति वितरण (एन = 350)

स्कोर	आवृत्ति
30.50	6
50.70	85
70.90	180
90.110	75
110.130	4
कुल	350

तालिका 4 में जिम्मेदारी की भावना के चर पर वितरण की आवृत्तियों के अंकों के साथ कुल जनसंख्या की भविष्यवाणी की गई है, अधिकांश आवृत्ति वितरण सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए 70−90 के वर्ग अंतराल के बीच स्थित है।

तिरछापन और कुर्टोसिस के सभी मान −2 से +2 की सीमा के भीतर थे। इसके अलावा, तिरछापन और कुर्टोसिस दोनों के लिए उनके मानक त्रुटियों पर निरपेक्ष मान भी बहुत कम स्वीकार्य प्रस्थान के साथ स्वीकार्य सीमाओं के भीतर पाए गए। इस प्रकार, सभी चरों के लिए, तिरछापन और कुर्टोसिस के मान ने सामान्यता से कोई महत्वपूर्ण विचलन नहीं दिखाया। इसलिए, यह मान लेना सुरक्षित है कि डेटा सामान्य रूप से वितरित है।

7. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के उपरोक्त निष्कर्षों से पता चलता है कि शिक्षण योग्यता का शिक्षण क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वर्तमान अध्ययन आगे दिखाता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। यह इस तथ्य के कारण है कि शिक्षक का दृष्टिकोण, पूर्ण किए गए और पढ़ाए गए कार्य की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। शिक्षक का दृष्टिकोण उसके पास मौजूद क्षमता की छाप छोड़ता है। शिक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण से शिक्षण क्षमता का स्तर कम होता है। यह दर्शाता है कि शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निश्चित रूप से शिक्षकों को बेहतर शिक्षण क्षमता विकसित करने में मदद करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष जयकांथन (2003) द्वारा समर्थित हैं, जिन्होंने बताया कि शिक्षकों की सामान्य शिक्षण क्षमता और शिक्षण के प्रति उनका दृष्टिकोण एक−दूसरे से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित थे और उम्र और योग्यता ने शिक्षण क्षमता को प्रभावित किया। ज़कारिया (2010) लियाकोपोलू (2011) ने अपने अध्ययन में यह भी पाया कि विशेष कौशल, शैक्षणिक और विषय−वस्तु का ज्ञान तथा शिक्षण के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षण क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोकसल (2013) ने शिक्षण क्षमता और शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण के बीच महत्वपूर्ण संबंध का संकेत दिया। बसापुर (2019) ने अपने अध्ययन में शिक्षण क्षमता और शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण के बीच महत्वपूर्ण अंतर दिखाया और पीजीटी शिक्षकों में टीजीटी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण क्षमता और पेशे के प्रति दृष्टिकोण काफी अधिक है।

वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षण क्षमता और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की जिम्मेदारी की भावना के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिक्षक स्वयं अपने छात्रों को प्रभावी तरीके से पढ़ाने के लिए दायित्व और कर्तव्य की आंतरिक भावना महसूस करते हैं। इसलिए, प्रभावी तरीके से पढ़ाने के लिए शिक्षक की शिक्षण क्षमता एक आवश्यक घटक है और इसलिए शिक्षक अच्छे पाठ तैयार करने, संघर्षरत छात्रों की मदद करने और छात्र सीखने का समर्थन करने के लिए अपने शिक्षण को लगातार बेहतर बनाने का प्रयास करने के लिए पर्याप्त प्रयास करते हैं।

8. सन्दर्भ

1. औहागेन ए. ई., बियरहॉफ़ एच. डब्ल्यू. उत्तरदायित्व. एक सामाजिक घटना के कई चेहरे. सामाजिक मनोविज्ञान में रूटलेज रिसर्च इंटरनेशनल सीरीज़, 2001.
2. औज़िना ए. शिक्षा में वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षक की योग्यताएँ. जर्नल ऑफ़ एजुकेशन कल्चर एंड सोसाइटी. 2018;9(2):24−37.
3. बाबू, आर. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता। सोनाली प्रकाशन, नई दिल्ली।, 2007.
4. बैशाली, आर. भारतीय संदर्भ में अंग्रेजी पढ़ाने की योग्यता: एक परिस्थितिजन्य विश्लेषण। जर्नल ऑफ लैंग्वेज टीचिंग एंड रिसर्च. 2012;6(1):71−77।
5. बाला, आर. सिंह, जी. शिक्षण योग्यता के संबंध में भावी शिक्षकों की शिक्षण योग्यता पर बी.एड. कार्यक्रम का प्रभाव। इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी ई−जर्नल. 2013;2(9):39−46।
6. बाम, एम. शिक्षकों की शिक्षण रुचि, शिक्षण योग्यता और इसका संबंधः त्रिपुरा के सिपाहीजाला जिले में एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज। 2019;9(7):537−545.
7. बनर्जी, श्रीजिता और बेहरा, एस.के. भारत के पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन एजुकेशन एंड रिव्यू. 2014;2(3):56−63।
8. बरियाना एस.एस. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अभी लंबा रास्ता तय करना है। द ट्रिब्यून, चंडीगढ़।, 2019.
9. बरुआ पी, गोगोई एम. डिब्रूगढ़ जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में समायोजन के संबंध में शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस स्टडीज (आईजेएचएसएसएस). 2017;3(4):166−177.
10. बसापुर के. बी. मुरारजीदेसाई आवासीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन, शिक्षण क्षमता और शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण के बीच संबंधों का एक अध्ययन। ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एंड बिजनेस रिव्यू. 2019;7(7):14−17.
11. बेलागली एच.वी. लिंग और स्थानीयता के संबंध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण पेशे के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का एक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय संदर्भित शोध पत्रिका. 2011;3(32):18−19.
12. बेरी एन. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का उनके शिक्षण योग्यता के संबंध में व्यावसायिक समायोजन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज.

2015;5(10):572–582.
13. बर्सिसा ए. शिक्षण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में नामांकित भावी शिक्षकों के दृष्टिकोण का आकलनः वोलेगा विश्वविद्यालय का मामला। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कला अनुसंधान जर्नल, अक्टूबर–दिसंबर. 2012;1(4):65–73.
14. द्विवेदी, एस. शिक्षण क्षमता पर प्री–सर्विस शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव। जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च. 2012;7(1):96–109।
15. एरेन ए, टेज़ेल के. वी. शिक्षण विकल्प, शिक्षण के बारे में पेशेवर योजनाएँ और भविष्य के समय के परिप्रेक्ष्य को प्रभावित करने वाले कारकः एक मध्यस्थता विश्लेषण. शिक्षण और शिक्षक शिक्षा. 2010;26(7):1416–1428.
16. एरेन ए. भावी शिक्षकों का भविष्य के समय का परिप्रेक्ष्य और शिक्षण के बारे में पेशेवर योजनाएँः अकादमिक आशावाद की मध्यस्थ भूमिका। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 2012ए;28(1):111–123.
17. एरेन ए. भावी शिक्षकों की शिक्षण में रुचि, शिक्षण के बारे में पेशेवर योजनाएँ और कैरियर विकल्प संतुष्टिः एक प्रासंगिक रूपरेखा। ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा पत्रिका, 2012बी;56(3):303–318.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.